सैक्सी स्कूल टीचर
भाग-२

रचयिता: रीना कँवर

(c) 2006
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.
This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in

अगले दिन भी नीरा ने स्टूडेंट्स को अपना शबाब दिखा-दिखा कर सताना ज़ारी रखा और वोह भी पहले से ज्यादा। नीरा सारा दिन बे-सब्री से आखिरी क्लास का इंतज़ार करती रही और जब उस क्लास में रोहित नहीं दिखा तो बहुत मायूस हुई। लेकिन जल्दी ही जब उसने रोहित को क्लास में देर से भाग के अंदर आते देखा तो नीरा का चेहरा खिल उठा।

"रोहित... देर से इस तरह क्लास में घुस कर मेरी क्लास को डिस्टर्ब करने का क्या मतलब है," नीरा अपनी खुशी छिपाते हुए गुस्से से बोली।

रोहित का चेहरा शर्मिंदगी से लाल हो गया और वोह हकलाते हुए बोला, *"सॉरी मैडम, मैं कहीं उलझ गया था।"*

नीरा को रोहित की परेशानी से मज़ा आ रहा था। पिछले दिन जब रोहित ने उसकी चूत में अपनी अँगुलियाँ घुसाई थीं तो वोह उसके हाथ का खिलोना बनी हुई थी लेकिन इस समय नीरा का कंट्रोल था।

"कल भी तुम कहीं और उलझ तो नहीं गये थे...?" यह सुन कर रोहित अपनी जगह पे ही जम गया क्योंकि उसे लगा कि नीरा उनकी चुदाई की तरफ इशारा कर रही थी पर उसने राहत की साँस ली जब नीरा आगे बोली, *"या तुम अपना एसाइनमेंट कर के लाये हो?"*

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission. Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

"येस मैडम, मैंने एसाइनमेंट के सब सवाल किए हैं।"

"तो फिर क्या तुम दरवाजा बँद कर के यहाँ ब्लैक–बोर्ड पे लिख के क्लास के साथ डिसकस करोगे," नीरा अपना स्टूल टेबल के पीछे खिसकाती हुई बोली।

रोहित ने अपनी किताबें अपने डेस्क पे रखीं और दरवाजा बंद करके अपनी एसाइनमेंट की कॉपी लेकर क्लास के सामने आ गया। वोह समझ नहीं पा रहा था कि नीरा मैडम आज उस के पीछे क्यों पड़ी है। स्टूडेंट्स अक्सर क्लास में देर से आते थे पर कोई टोकता नहीं था। आखिर यह कॉलेज था कोई स्कूल नहीं। उसे लगा शायद नीरा पिछले दिन की चुदाई के लिए नाराज़ थी पर वोह तो बोली थी कि उसे मज़ा आया था और वोह थैंक यू भी बोली थी, पर अब...। बेचारा रोहित बहुत परेशान था, उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

खैर वोह बोर्ड पे चॉक से लिखने लगा। थोड़ा लिखने के बाद इस आश्वासन के लिए कि वोह सब ठीक कर रहा है, रोहित ने अपनी टीचर की तरफ मुड़ कर देखा। नीरा को अपनी टाँगें चौड़ी कर के बैठे देख रोहित का कलेजा मुँह को आ गया। नीरा ने अपनी सलवार घुटनों तक नीचे खिसका ली थी और अपने हाथ से पैंटी को एक तरफ किया हुआ था। रोहित की नज़र नीरा के चेहरे पे गयी तो वोह मुस्कुरा रही थी। रोहित ने जल्दी से बाकी क्लास की तरफ देख तो उसे एहसास हुआ कि आज नीरा डेस्क के सामने बैठने कि बजाय डेस्क के पीछे बैठी थी और इतना बड़ा डेस्क नीरा की इस हरकत को बाकी क्लास से छिपाए हुए था। सिर्फ़ वो ही नीरा की कमर की नीचे का हिस्सा देख सकता था।

रोहित ने नीरा की चूत पे से अपनी नज़र हटाई और एक बार फिर बोर्ड पे

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

लिखने लगा। उसके हाथ जाहिर तौर से काँप रहे थी जो कि उसकी लिखावट से भी पता लग रहा था। साथ ही उसका लंड भी खड़ा हो गया था और रोहित को डर था कि कहीं और लोगों को इस बात का पता ना चल जाये पर फिर भी वोह मुड़–मुड़ कर अपनी टीचर की नंगी चिकनी चूत निहारने से खुद को रक नहीं पा रहा था।

इस बार जब उसने देखा तो उसकी साँस ही अटक गयी। नीरा ने अपनी दो अँगुलियाँ अपनी चूत मे घुसेड़ दी थीं और उन्हें चूत में अंदर बाहर कर रही थी। रोहित ने एक नज़र बाकी स्टूडेंट्स की तरफ देखा जिन्हें इस बात का बिल्कुल अन्दाज़ा नहीं था कि क्या चल रहा है। उसने वापिस घूम कर बोर्ड पे लिखना शुरू किया तो घबड़ाहट में उसका चॉक बोर्ड से टकराया और उस के हाथ से छूट के नीचे गिर गया। क्लास में एक जोर से हँसी का ठाहका गूँजा और शर्मिंदगी से रोहित का चेहरा लाल हो गया। उसने चॉक को नीरा की तरफ लुढ़कते देखा तो वोह उसे उठाने के लिए झुका और उसने खुद को नीरा की खुली टाँगों के बीच में पाया। रोहित नीरा की गुलाबी–सी गोरी चूत और उसमें घुसी अँगुलियों को देखने लगा। उसे अपनी टीचर की चूत की खुशबू तक आ रही थी।

रोहित ने फिर साइड पे देखा तो उसे एहसास हुआ कि वोह अब डेस्क के पीछे छिपा हुआ था और फिर वापिस गर्दन घुमायी तो उसे अपनी टीचर की चूत–रस में भीगी हुई चमकती अँगुलियाँ अपने चेहरे के नज़दीक दिखीं। रोहित ने अपना मुँह खोला तो नीरा ने अपनी चूत–रस में भीगी अँगुलियाँ उसके मुँह में घुसेड़ दी। पूरी क्लास के सामने, हालाँकि डेस्क के पीछे छिप कर, रोहित ने अपनी टीचर की अँगुलियाँ चूस कर साफ कीं और फिर चॉक उठा कर जल्दी से खड़े हो कर बोर्ड पे जा कर अपना काम खतम क्या।

"थैंक यू, रोहित... तुम्हारा काम तारीफ के काबिल था... अब तुम बैठ सकते

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

हो," नीरा अपनी हँसी रोकते हुए बोली।

रोहित अपनी कॉपी से अपने लंड को छिपाता हुआ अपनी सीट पे जा के बैठ गया। उसने क्लास–रूम का निरीक्षण किया पर किस्मत से किसी का भी ध्यान उसकी तरफ नहीं था। सब लोगों का ध्यान नीरा की तरफ था जो अब आगे का लेक्चर दे रही थी।

क्लास के अंत में, जो कि उस सप्ताह की आखिरी क्लास थी, नीरा ने रोहित को अपनी किताबें समेटते हुए देखा। जब सब स्टूडेंट्स बाहर जा रहे थे तो रोहित कुछ तय नहीं कर पा रहा था। नीरा भी मन ही मन रोहित के रुक जाने की प्रार्थना कर रही थी। जब सब क्लास के बाहर चले गये तो रोहित क्लास के पीछे अपनी सीट पे ही बैठा था। यह जानते हुए कि रोहित उसे ही निहार रहा है, नीरा धीरे–धीरे अदा से अपनी हाई हील सैंडल खटखटाती हुई दरवाजे की तरफ गयी और दरवाजा बंद कर के सिटकनी लगा दी। फिर घूम के धीरे धीरे अपने डेस्क की तरफ जाती हुई नीरा ने अपना दुपट्टा हटा कर नीचे गिरा दिया। फिर अपनी सलवार अपने चूत्तड़ों से नीचे खिसका कर अपने डेस्क पे उछल कर अपनी टाँगें चौड़ी कर के बैठ गयी और अपनी और ताकते रोहित की तरफ देखने लगी।

नीरा ने अपनी कमीज़ उतार के एक तरफ उछाल दी और अपनी ब्रा के हुक खोल के उसे भी साईड में फेंक दिया। नीरा अब कमर से ऊपर बिल्कुल नंगी अपनी टाँगें फैला कर अपने डेस्क पे बैठी थी और उसकी सलवार उसकी टाँगों में नीचे खिसकी हुई थे। यह नीरा के आज तक की सब सी कामुक परफोर्मेंस थी और नीरा ने रोहित को ही घूरते हुए अपनी सलवार अपनी टाँगों से खींच कर निकाली और एक तरफ फेंक कर अपनी चूचियाँ मसलने लगी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

फिर नीरा ने अपनी पैंटी उतारने के लिए अपने हाथ अपनी चूचियों से हटाए और अपनी गाँड को डेस्क से ऊपर उचका कर अपनी पैंटी अपनी टाँगों पे नीचे खींची और सिर्फ़ एक टाँग से निकाल कर पैंटी को दूसरे पैर पे लटकते हुए छोड़ दी। अब वोह सिर्फ डार्क ब्राऊन रंग के हाई हील सैंडल पहने हुए फिर से अपनी चूचियाँ मसलने लगी। लेकिन उसकी चूत में दहक रही आग भी नीरा का ध्यान अपनी और खींच रही थी। इसलिए उस चुदास टीचर ने अपना एक हाथ अपनी चूंची से हटा कर अपने चूत पे रख लिया और लगतार अपने स्टूडेंट की आँखों में देखती हुई अपनी क्लिट रगड़ने लगी।

रोहित भी कब से अपनी पैंट के ऊपर से ही अपना लौड़ा सहला रहा था। फिर वोह भी खड़ा हो के अपनी टीचर के पास गया और झुक के अपने होंठ नीरा की चूंची पे रख दिये। नीरा ने सिसकारी भरते हुए रोहित का सिर पीछे से पकड़ कर अपनी चूँची पे दबा दिया। फिर रोहित ने पीछे हट कर नीरा की जाँघों पे हाथ रखा। नीरा की अँगुलियाँ अभी भी अपनी फूली हुई क्लिट रगड़ रही थीं। रोहित ने नीचे झूक कर अपनी जीभ नीरा की चूत पे एक बार फिरायी और फिर खड़ा हो गया। रोहित ने ऐसा कई बार किया पर हर समय सिर्फ एक बार ही अपनी जीभ फिरा कर रुक जाता था।

"रोहित... प्लीज़... मुझे ऐसे तड़पा नहीं... चाट मेरी चूत... अब नहीं रुका जाता" नीरा बेचैनी से बोली।

खुद अपनी हरकतों से लड़कों को हर समय तड़पाने वाली टीचर के मुँह से यह बात सुन कर रोहित मुस्कुरा दिया पर वोह नीरा की बात मान कर झुकते हुए नीरा की चूत चाटने लगा। रोहित के मुँह को ठीक से जगह देने के लिए नीरा ने अपना हाथ अपनी क्लिट पे से हटा लिया। रोहित पूरे जोश में नीरा की चूत अपने जीभ से चाट रहा था और नीरा अपनी चूचियाँ मसल

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

रही थी। रोहित के चाटने से नीरा मदहोश सी होने लगी और उसे लगा की वोह गिर जायेगी। इसलिए उसने खुद को सहारा देने के लिए अपने हाथ डेस्क पे अपने पीछे टिका लिए। रोहित की जीभ नीरा को अपनी चूत में इतनी अच्छी लग रही थी कि उसने अपनी टाँगें उठा कर रोहित के कँधों पे रख दीं और उसका सिर अपनी मखमली माँसल जाँघों में कस लिया। अब नीरा मस्ती से तिलमिला उठी और आगे–पीछे हो कर अपनी चूत रोहित की जीभ पे दबाती हुई धक्के मारने लगी। रोहित भी पूरी मस्ती में अपनी जीभ नीरा की चूत में अंदर बाहर कर के सटासट चोदने लगा। *"आआआहहहहह ऊईईईईईईई... चाट मेरी चूत... हाय... उफफफफफ... पूरे बदन में नशा छा रहा है... हाय मैं झड़ने वाली हूँ"* चिल्लाती हुई नीरा अपने चूत्तड़ आगे ढकेल कर झड़ने लगी और चींखते हुए अपनी चूत का रस रोहित के चेहरे पे छोड़ दिया।

रोहित ने फिर भी नीरा की चूत को चाटना उस समय तक जारी रखा जब नीरा ने अपनी टाँगें फैला कर रोहित के बाल पकड़ कर उसका मुँह अपनी चूत से हटाया। उसकी चूत उस समय और उत्तेजना सहन नहीं कर सकती थी। नीरा डेस्क से नीचे खिसकती हुई और रोहित को पीछे ढकेलती हुई नीचे उतरी। अपने घुटनों के बल बैठ के नीरा ने अपने स्टूडेंट की बेल्ट और पैंट खोली और उसका ज़िप्पर नीचे किया। फिर रोहित की पैंट और अंडर–वीयर एक साथ नीचे खींच कर नीरा ने उसके तने हुए मोटे लंड को आज़ाद कर दिया। अगले ही क्षण रोहित का लंड उसकी तीचर के मुँह में था।

"ओह, ढिल्लों मैडम..." रोहित सिसका।

नीरा को जो मज़ा और तृपति रोहित से मिली थी वही मज़ा नीरा उसे वापिस देना चाहती थी। नीरा ने उसके लंड को नीचे से पकड़ कर अपने रसीले

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

होंठों में भर लिया। नीरा अपना सिर आगे–पीछे हिला कर उसके लंड पे अपने होंठ और जीभ फिराती हुई चूसने लगी। फिर रोहित के लौड़े को मुँह से निकाल कर नीरा ने अपने पूरे चेहरे पे रगड़ कर उस के स्पर्श का मज़ा लिया और फिर से अपने मुँह में डाल कर जोर–जोर से चूसने लगी।

रोहित ने नीरा के सिर पे अपने हाथ रख कर खुद को सहारा देने की कोशिश की पर नीरा का सिर बहुत ज़ोर–ज़ोर से हिल रहा था। इसलिए रोहित ने आगे झूक कर डेस्क पे अपने हाथ रख लिए और अपने चूत्तड़ आगे पीछे कर के अपनी टीचर का मुँह चोदने लगा। नीरा को बीच–बीच में साँस लेने में परेशानी हो रही थी क्योंकि रोहित के धक्कों के कारण उसका लौड़ा नीरा के गले में टकरा रहा था पर नीरा भी मस्ती में गोंगियाती हुई रोहित के लंड के धक्के अपने मुँह में खाती हुई अपना सिर स्थिर रखे हुए थी। सिर्फ एक बार जब रोहित ने बहुत ही तेज झटका दिया तो नीरा का सिर असावधानी के कारण पीछे से डेस्क पे टकराया। नीरा चाहती थी कि रोहित धक्के ना मारे ताकि वोह उसका लौड़ा इतमीनान से चूस सके पर वोह जानते थी कि रोहित बहुत मस्ती में था और इसीलिए इतनी बे–रहमी से अपनी टीचर का मुँह चोद रहा था। साथ ही यह खयाल इस चुदास टीचर को बहुत उत्तेजित कर रहा था कि वोह घुटनों के बल बैठी है और डेस्क पे झुका हुआ उसका स्टूडेंट अपना लंड उसके मुँह में जोर–जोर से गले तक ठाँस रहा है। अचानक फिर नीरा को अपने मुँह में रोहित का गरम चिपचिपा रस महसूस हुआ। *"ओहहहह... आहहहह... मैडम.... साली... चूस... आह्हह..."* रोहित के मुँह से चींख निकली और उसका बदन सर से पाँव तक काँप गया। नीरा को गाली सुन के अच्छा लगा और वो बड़ी खुशी से अपनी मेहनत का इनाम समझ कर रोहित के लंड का मलाईदार रस अपने मुँह में लेने लगी। रोहित तेजी से अपना गाढ़ा रस का फुहारा नीरा के गले में छोड़ रहा था और नीरा भी उतनी ही तेज़ी से उसका रस गटकने लगी पर रोहित के लंड से इतनी अधिक मात्रा में रस निकल रहा था कि नीरा उसका

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

मुकाबला नहीं कर पा रही थी। जब नीरा का मुँह लबालब भर गया तो रोहित का गाढ़ा रस नीरा के लिपस्टिक लगे लाल–लाल होठों से किनारे से बाहर निकल कर बहने लगा।

जब रोहित का रस निकलना बँद हो गया तो नीरा खड़ी हो गयी रोहित ने भी हाँफते हुए खुद को सहारा देने के लिए डेस्क को पकड़ लिया। बहुत ही हसीन नज़ारा था। टीचर सिर्फ हाई हील के सैंडल पहने बिल्कुल नंगी थी और उसकी पैंटी अभी भी उसके एक पैर और सैंडल के हील में अटकी हुई थी। स्टूडेंट ने शर्ट पहनी हुई थी पर उसकी पैंट उसके पैरों तक नीचे खिसकी हुई थी और अंडर–वीयर घुटनों पे था। दोनों क्लास–रूम में बिल्कुल अकेले, डेस्क पर झुके हुए ज़ोर–ज़ोर से हाँफ रहे थे। रोहित का लौड़ा उसकी टीचर के थूक से सना हुआ चमक रहा था और थूक की एक बूँद लंड के छोर से लटक रही थी जबकि नीरा अभी भी अपने मुँह में भरा अपने स्टूडेंट का काम–रस चटखारे मारती हुई निगल रही थी। नीरा की ठुड्डी पे भी रोहित का रस चिपका हुआ था।

"वाह। ढिल्लों मैडम, यह दुनिया की सबसे अच्छी लंड–चुसाई थी," रोहित बोला।

"तूने भी तो मेरी चूत अच्छी तरह से चूस कर मुझे जन्नत का मज़ा दिया, डार्लिंग, पर अब मुझे चूत में तेरी जीभ की जगह तेरा मस्त लौड़ा चाहिए," नीरा बोली तो रोहित जोर से मुस्कुरा दिया। रोहित ने अपनी शर्ट फटाफट उतार कर एक तरफ उछाल दी और फिर झुक कर अपनी पैंट और अंडर–वीयर भी अपनी टाँगों से निकाल दिये। अपने आधे खड़े लंड को उसने अपने हाथ में लिया और कुछ ही क्षणों में उसका लंड तन कर सीधा खड़ा हो गया। चुदाई की प्रतीक्षा में नीरा लार टपकाती हुई लंड–मार नज़रों से रोहित को यह सब करते देख रही थी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

रोहित जब नीरा के करीब आया तो नीरा निश्चित नहीं थी कि उसके मन में क्या है पर रोहित ने नीरा को कमर से पकड़ कर बड़े प्यार से डेस्क पे आगे झुका दिया। नीरा ने भी झुक कर डेस्क पे अपने हाथ रख दिए। रोहित ने अपने एक पैर से नीरा के एक सैंडल पर हल्के से ठोक कर उसका पैर बाहर को खिसकाया और फिर वैसा ही नीरा के दूसरे पैर के साथ किया जैसे कि कोई पुलिस वाला किसी कि तालाशी करने की तैयारी कर रहा हो। फिर रोहित ने नीरा की फैली टाँगों के बीच में खड़े हो कर पीछे से अपना मूसल जैसा तना हुआ लंड नीरा की चूत पे दबा दिया। जब नीरा ने भी उसका लंड अंदर लेने के लिए अपने चुत्तड़ पीछे को ढकेले तो रोहित ने पीछे हट कर नीरा की गाँड पे एक चपत लगा दी।

"ओए.. यह क्यों किया तूने?" नीरा ने पूछा, हालांकि चपत जोर से नहें लगी थी।

"अरे मैडम... तुम मत हिलो... मुझे ही करने दो।"

नीरा मुस्कुरा कर उसके लंड का इंतज़ार करने लगी। उसे एक बार फिर रोहित का गरम लंड अपनी टाँगों के बीच रगड़ता हुआ अपनी चूत में घुसता हुआ महसूस हुआ। नीरा अपनी गाँड पीछे ढकेल के उस सख्त लौड़े को जल्दी से अपनी चूत में लेना चाहती थी पर उसने खुद को रोके रखा। नीरा थोड़ा रुकी और फिर रोहित एक झटके में पूरा लंड उसकी चूत में घुसेड़ कर रुक गया। नीरा ने डेस्क पे झुके हुए अपनी आँखें बँद करके जोर से साँस अंदर खींची। नीरा ने पीछे के तरफ धका तो नहीं लगाया पर उतावलेपन में अपनी चूत को रोहित के लंड पे कस के जकड़ लिया। रोहित ने अपनी टीचर की पीठ पे झुक कर उसकी चूचियाँ पकड़ लीं और अपना आधा लंड चूत से बाहर निकाल के फिर अंदर ठेल दिया। घों..ओंओंओं...

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

नीरा के मुँह से आनन्द भरी सितकार निकली। नीरा को वैसे ही और धक्कों की उम्मीद थी पर रोहित नहीं हिला और नीरा की चूचियाँ मसलते हुए उसके कान कुतरने लगा।

"अरे रुका क्यों है... चोदता क्यों नहीं?" नीरा ने पूछा।

"मैडम तुम तो बहुत उतावली हो रही हो... क्या चूत में इतनी आग लगी है?"

"हाँ साले... अगर तूने मुझे जल्दी नहीं चोदा तो मेरी चूत अपने गरमी में जल कर राख हो जायेगी।"

रोहित नीरा की कमर से थोड़ा पीछे हटा और अपनी अँगुलियाँ नीरा की कमर पे फिराने लगा। रोहित की अँगुलियों के स्पर्श से नीरा को पूरे शरीर पे रोंगटे खड़े होते महसूस हुए। रोहित फिर से नीरा की पीठ पे आगे झुक गया और उसके चूत्तड़ सहलाने लगा। नीरा से अब रहा नहीं गया और उसने रोहित के लंड को हरकत में लाने के लिए अपने गाँड पीछे ढकेल दी। उसे रोहित की दबी हुई हँसी सुनायी दी और वोह जान गयी कि वोह रोहित को इस समय एक राँड लग रही होगी। रोहित ने नीरा की गाँड पे फिरते अपने हाथ रोक कर अपना लंड नीरा की चूत से बाहर निकाल कर एक जोर दर धक्के से वापस अंदर ठेल दिया।

"हाँ... ऐसे ही!... चोद मुझे... रोहित... प्लीज़ मुझे ऐसे तड़पा मत.... चोद मुझे...।"

रोहित ने फिर लंड थोड़ा बाहर खींच के अंदर ठेल दिया और फिर बार–बार ऐसा करते हुए हर धक्के के साथ अपनी गति बढ़ाने लगा। नीरा भी अपनी

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

आँखें बँद कर के अपनी गाँड आगे–पीछे करती हुई रोहित के धक्कों का जवाब देने लगी। *"ऊन्ध! ओहहहहह! चोद दे... ओहहहह!"* नीर कराह उठी। चुदाई की आशा और रोहित के सताने के आगे चुदाई की भूखी नीरा टिक नहीं पायी और कुछ ही देर में नीरा झड़ गयी। पर नीरा की खुशकिस्मती से रोहित ने बिना चूके धक्के मारते हुए अपना मूसल लंड उसकी चूत में कूटना जारी रखा। नीरा जल्दी ही और दो बार झड़ी। नीरा की लार उसके निचले होंठ से लटकते हुए डेस्क पे टपक रही थी। उसके बाल भी उसके पसीने से भरे चेहरे पे चिपके हुए थे और नीरा की मुठियाँ भी बँद–खुल रही थीं। चुदाई के आलौकिक सुख की लहरें नीरा के सुलगते बद्न को बहाए लिए जा रही थें। नीरा मस्ती में खुद को ऊपर नहीं रख पा रही थी और डेस्क पे अपनी बाँहें फैला कर पूरी झूक गयी। रोहित नीरा की गाँड पकड़ कर लगातार जोर–जोर से धक्के मार्ते हुए अपना लंड नीरा की चुदास चूत में पेल रहा था।

"ओहहहहह.... मैं... मैं फिर से... आयीईईईई.... ओंओं... आँआँआँ...ईईईईईईईई," नीरा झड़ते हुए चिल्लायी।

रोहित को विश्वास ही नहीं हुआ कि उसकी टीचर इतनी उत्तेजित थी। वोह जानता था कि नीरा बहुत ही खूबसूरत और सैक्सी औरत है जो क्लास में लड़कों को अपनी कामुक अदाओं से तड़पाती थी पर वोह इतनी गरम और चुदासी होगी, इस बात का रोहित को अंदाज़ा नहीं था। नीरा को रोहित से चुदवाने में बहुत आनन्द आया था। रोहित तब तक अपनी टीचर की चूत में पूरे जोश से अपना लंड पेलता रहा जब तक वोह खुद नहीं झड़ गया। रोहित ने झड़ते हुए आगे झुक कए नीरा के इर्द–गिर्द अपनी बाँहें लपेट दीं। नीरा आखिर में झुक के डेस्क पे सपाट पसर गयी जिससे उसकी चूचियाँ लकड़ी के डेस्क पे पिचक गयीं। रोहित भी नीरा की पीठ पे झुक कर हाँफने लगा और उसका लंड अभी भी नीरा की चूत में फड़क रहा था।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

आखिरकार रोहित ने पीछे हट कर अपनी टीचर की चूत में से अपना लंड बाहर निकाला और लड़खड़ाता हुआ एक कुर्सी पे जा के बैठ गया। नीरा डेस्क पे ही पड़ी हाँफ रही थी ।

कुछ देर बाद जब उनकी साँसें नियंत्रित हुईं तो दोनों एक दूसरे की चुदाई की प्रशंसा करते हुए कपड़े पहनने लगे। नीरा ने रोहित से पूछा कि वोह सप्ताहाँत में क्या कर रहा है। जब रोहित ने कहा कि वोह दोनों दिन फ्री है तो नीरा ने उस से पूछा कि क्या वोह किसी होटल में उससे मिलना चाहेगा। यह सुनकर रोहित खुशी से कूद पड़ा। फिर दोनों किस करके अपने घरों को निकल गए।

अगले दिन के लिए नीरा ने एक पाँच सितारा होटल में कमरा बुक कर दिया था और नीचे लॉबी में ही रोहित का इंतज़ार करने लगी। नीरा ने बहुत ही खूबसूरत लहँगा चोली पहना हुआ था जो बहुत भड़किला नहीं था। लहंगे के उप्युक्त ही उसके माथे पे बिंदी, कानों में झुमके, हाथों में चूड़ियाँ, और पैरों में लाल रंग के बहुत ही सैक्सी हाई हील के सैंडल थे। जब उसने रोहित को आते देखा तो हाथ हिला कर उसे इशारा किया। रोहित नीरा के पास आ कर नीरा को किस करने के लिए झुका तो नीरा ने पीछे हट कर घबड़ाहट से अपने आस–पास देखा और फिर दोनों लिफ्ट में आ गये। लिफ्ट का दरवाजा बँद होते ही नीरा ने अपने होंठ अपने युवा स्टूडेंट के होंठों पे रख कर उसे अपनी बाँहों में जकड़ लिया। चूमते वक्त रोहित के हाथ नीरा की गाँड पे थे। रोहित धीरे से नीरा का लहँगा ऊपर उठाने ही वाला था कि लिफ्ट का दरवाज़ा खुल गया और नीरा फिर उससे छूट कर अलग हो गयी।

कमरे में आ कर दरवाजा बँद करते ही दोनों फिर एक दूसरे को बाँहों में जकड़ कर एक दूसरे के मुँह में जीभ डाल कर चूमने लगे। इस बार रोहित

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

ने नीरा का लहँगा पीछे से ऊपर उठा कर अपने हाथ अपनी टीचर की पैंटी में डाल कर उसके मुलायम पर भारी चूत्तड़ों को मसलने लगा। नीरा रोहित को चूमते हुए उसके मुँह में ही सिसक रही थी। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वोह इतनी जल्दी उत्तेजित हो गयी थी और उसकी चूत भी गीली हो गयी थी। नीरा धीरे धीरे कदम बढ़ाती हुई आगे बढ़ रही थी और रोहित को पीछे खिसका रही थी। रोहित ने भी अपने हाथ नीरा की पैंटी के अंदर से निकाले नहीं थे और दोनों अपने होंठ एक दूसरे से चिपकाये हुए दीवानों की तरह चूम रहे थे। जब रोहित की टाँगें पीछे से पलँग से टकराईं तो वोह पीछे लुढ़क गया। नीरा की गाँड को अपने हाथों से दबोचे हुए उसने नीरा को भी अपने साथ अपने ऊपर गिरा लिया। फिर भी दोनों ने चूमना बँद नहीं किया और बिस्तर पर लोटने लगे। कभी रोहित नीरा के ऊपर होता तो कभी नीरा रोहित के ऊपर। आखिरकार नीरा ने चूमना छोड़ा और अपने स्टूडेंट की आँखों में शरारत से देखती हुई बोली, *"रोहित आज खूब मस्ती करेंगे... अब तू नंगा हो जा जल्दी से।"*

जैसे ही नीरा रोहित के ऊपर से हटी, रोहित ने अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिए। नीरा ने पहले से ही एक ब्लैक लबेल स्कॉच और नमकीन इत्यादि मँगवा रखे थे। नीरा ने उठ कर दो पैग बनाए और फिर एक ग्लास को चूम के रोहित को पकड़ा दिया। *"क्या पहले कभी पी है तूने?"* नीरा ने पूछा।

"नहीं मैडम, पर तुम इतने प्यार से दे रही हो तो मना कैसे करूँगा।"

"पहली बार पी रहा है तो यह एक ही पैग से तुझे अच्छा सुरूर हो जायेगा और फिर चोदने में ज्यादा मज़ा आयेगा.... चीयर्स डार्लिंग!" नीरा रोहित के ग्लास से अपना ग्लास टकराती हुई बोली। रोहित बिस्तर पर आधा लेटा हुआ धीर–धीरे चुस्कियाँ लेने लगा पर नीरा जल्दी से अपना पैग खतम कर के खड़ी हो गयी। नीरा ने धीरे से अपनी चोली के हुक खोल के चोली

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

उतारी और फिर धीरे से अपना लहँगा खोलने लगी। नीरा ने ब्रा नहीं पहनी थी। रोहित अपने पैग की चुस्कियाँ लेते हुए अपनी टीचर को नंगा होते देख रहा था और जब नीरा का लहँगा ज़मीन पर गिरा तो रोहित अपने होंठ चाटने लगा। उसकी टीचर अब अब सिर्फ पैंटी और हाई हील सैंडल पहने उसके सामने खड़ी थी।

"ढिल्लों मैडम, तुम बहुत ही सैक्सी हो," रोहित फुसफुसाया। रोहित पे व्हिस्की का हल्का–हल्का सुरूर छा रहा था।

"हाँ... दिख रहा है कि तुझे मेरा हुस्न पसंद आया," नीरा ने हँसते हुए रोहित के खड़े लंड की तरफ इशारा किया।

नीरा ने हाथ बढ़ा कर पास की टेबल से व्हिस्की की बोतल उठाई और सीधे मुँह लगा कर दो–तीन घूँट पीये। फिर बोतल वापस रख कर बहुत ही धीरे–धीरे, एक–एक इंच करके अपनी पैंटी नीचे खिसकाने लगी। नीरा की नज़रें रोहित के चेहरे पर ही टिकी थीं और उसे रोहित की आँखों में हवस साफ–साफ दिख रही थी। नीरा को इतनी धीरे–धीरे छेड़खानी के साथ पैंटी खिसकाते देख रोहित का मन हुआ कि बिस्तर से लपक के उठ कर खुद ही नीरा की पैंटी खींच दे पर वोह खुद पे काबू रखते हुए नीरा को देखता रहा। जब नीरा ने पैंटी चूत से नीचे खिसकयी तो पैंटी उसकी गीली चूत पे चिपकती हुई हटी। एक बार जब पैंटी जाँघों तक आ गयी तो नीरा ने जल्दी उतार कर सूँघने के बाद रोहित की तरफ उछल दी। अब नीरा का बिल्कुल नंगा कामुक बदन रोहित के सामने था। नीरा सिर्फ लाल रंग के हाई हील सैंडल पहने हुए बिल्कुल नंगी किसी अपसरा से कम नहीं लग रही थी। रोहित ने भी नीरा की पैंटी पकड़ कर अपने चेहरे पे दबा ली। नीरा ने मुस्कुराते हुए फिर से व्हिस्की की बोतल उठायी और बिस्तर पर आ गयी। वोह सीधे बोतल से ही पीती हुई रोहित का लंड पकड़ कर सहलाने लगी।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

"मैडम... तुम तो बहुत बड़ी पियक्कड़ लगती हो...," रोहित अपना खाली ग्लास किनारे रखता हुआ बोला।

"मैं आज खूब मज़ा लेना चाहती हूँ... खूब मदहोश हो कर चुदाई का आनन्द लूँगी," नीरा बोली और फिर एक घूँट पी कर रोहित का लंड अपने मुँह में ले लिया। रोहित का लंड चूसते हुए नीरा जोर–जोर से अपना सिर ऊपर नीचे करने लगी और पूरा कमरा नीरा के मुँह से निकलती चूसने और सुड़कने की अवाज़ों से भर गया। रोहित जल्दी ही सिसकारी लेते हुए अपने चूत्तड़ ऊपर उठा कर नीरा के मुँह में झड़ने लगा और नीरा ने भी जल्दी–जल्दी उसका सारा वीर्य पी लिया।

"मम्मम्म... अब तेरा उतावलापन कुछ कम हुआ कि नहीं," नीरा मुस्कुराते हुए अपने होंठ चाटने लगी।

"वाह! मैडम तुम तो बिल्कुल रंडी की तरह लंड चूसती हो।"

नीरा को रोहित की यह टिप्पणी काफी उत्तेजक लगी। वोह होटल के कमरे में नशे में मदहोश, बिस्तर पे सिर्फ अपने सैंडल पहने अपने नंगे स्टूडेंट के साथ थी जिसका लंड चूस कर उसने अभी–अभी वीर्य पिया था और अभी तो उसे बहुत कुछ करना था। नीरा ढिल्लों को अपने बारे में यह बात पता लग गयी थी कि उसे चुदाई बहुत प्यारी थी और जब भी उसे चुदवाने का मौका मिलेग वोह छोड़ेगी नहीं।

नीरा के चेहरे पे बहुत ही कुटिल भाव आ गये। रोहित के ऊपर चढ़ कर नीरा उसके सिर के पास अपने टाँगें फैला कर बैठ गयी और अपनी चूत रोहित के मुँह पे रख दी। जब नीरा को रोहित की जीभ अपनी चूत पे

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

महसूस हुई तो वोह रोहित के मुँह पे अपनी चूत आगे–पीछे कर के झूलने लगी। अपनी चूत चटवाती हुई भी नीरा बोतल मुँह से लगा कर शराब पी रही थी और अब वोह काफी नशे में मदहोश थी। नीरा को उम्मीद नहीं थी कि वोह भी रोहित की तरह इतनी जल्दी झड़ने लगेगी। नीरा जोर–जोर से अपनी चूत रोहित के चेहरे पे रगड़ने लगी और काँपती हुई झड़ गयी।

जैसे ही नीरा के जिस्म के धधकते शोले ठंडे पड़ने लगे तो रोहित के ऊपर से हट कर नीरा घूम कर उसकी बगल में लेट गयी। उसे नशे में मदहोश देख कर रोहित ने नीरा के हाथ से आधी भरी बोतल ले कर पलंग के किनारे ज़मीन पे रख दी। फिर नीरा के ऊपर झूक कर रोहित उसके चूचियों से खेलते हुए उन्हें मसलने लगा और बीच–बीच में कभी नीरा के निप्पल अपनी अँगुलियों से मरोड़ देता। नीरा के निपाल सख्त बन कर सीधे खड़े हो गये तो रोहित अपने मुँह, होंठ और जीभ से अपनी टीचर की चूचियाँ और निप्पलों को चूमने–चाटने लगा। नीरा ज़ोर–ज़ोर से सिसकारियाँ लेती हुए कॉलेज के इस युवा कड़के के शरीर पे जहाँ भी हाथ पहुँच रहे थे, मसलने लगी। कभी उसकी पीठ या बाँहें होती तो कभी रोहित की गाँड पकड़ के उसके चूत्तड़ सहलाती और कभी रोहित के लौड़े को पकड़ के रगड़ने और निचोड़ने लगती।

जब रोहित का लंड नीरा के हाथ में था तो रोहित उसके ऊपर ही लेट गया। नीरा ने अपनी टाँगें फैलाकर रोहित का लंड अपनी चूत पे रख दिया और रोहित ने भी बिना देर किए धक्का मार कर लंड नीरा की चूत में पेल दिया। चुदाई चालू हुई तो दोनों के चूत्तड़ एक स्वर में चलने लगे... और उनकी घमासान चुदाई तब तक चलती रही जब तक दोनों झड़ नहीं गये।

"ओह, रोहित, वादा कर कि तू कभी मुझे चोदना बँद नहीं करेगा," नीरा प्यार से रोहित का लंड पुचकारती हुई बोली।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

"हमारे पास और कितना समय है?" रोहित ने पूछा।

"आज पूरा दिन और पूरी रात।"

रोहित को अचम्भित देख कर नीरा आगे बोली, *"मेरे हसबैंड बाहर गये हैं... तुझे रात को रुकने में कोई दिक्कत तो नहीं?*

"मैं तो होस्टल में रहता हूँ... मुझे क्या दिक्कत हो सकती है," रोहित बोला।

दोनों फिर से चिपट गये और जब रोहित का लंड खड़ा हुआ तो उन्होंने फिर से चुदाई की। बाद में नीरा ने अपनी चूत–रस और रोहित के विर्य के मिश्रण से भीगे रोहित के लंड को अपने मुँह में ले कर चूसा। उसे इसका स्वाद बहुत अच्छा लगा और उसे ऐसा एहसास हुआ कि वोह उसका सत्कार कर रही हो। साथ ही एक और कारण भी था – चूसने से रोहित का लंड दोबारा खड़ा हो जाता था। इस तरस, सोने से पहले दोनों ने पाँच बार चुदाई की।

अगले दिन सुबह जब रोहित की आँख खुली तो उसने अपनी टीचर को अपना लंड चूसते पाया। नीरा अभी भी केवल हाई हील सैंडल पहने हुए बिल्कुल नंगी थी। जब रोहित के साथ–साथ उसका लौड़ा भी जाग गया तो नीरा ने उसके ऊपर चढ़ कर उसका लंड अपनी चूत में घुसेड़ लिया और अपने झड़ने तक उसके खम्बे जैसे लंड पे ऊपर नीचे उछलती हुई अपने चूत चुदवाती रही। फिर रोहित के ऊपर से हट कर नीरा ने उसका लंड अपने मुँह में भर लिया। नीरा के अभ्यस्त मुँह और जीभ ने जल्दी ही रोहित के लंड को स्खलित कर दिया और उसका सारा वीर्य गटक गयी।

वो दोनों बाथरूम में जा कर शॉवर के नीचे एक दूसरे को नहलाने लगे।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

नहाना खतम करने के पहले नीरा दीवार के सहारे झुक कर अपनी गाँड बाहर निकाल कर खड़ी हो गयी। रोहित ने पीछे से अपना लंड नीरा की चूत में घुसेड़ दिया और धीरे–धीरे चोदने लगा जिसने बाद में धुँआ–धार चुदाई का रूप ले लिया। नीरा इस चुदाई के दौरान दो बर झड़ी और उसके बाद रोहित भी स्खलित हो गया। उसके बाद दोनों ने आपस में मस्ती करते हुए नहाना ज़ारी रखा, पर यह नहाना कम और आपस में खिलवाड़ ज्यादा था। जब पानी ठंडा होने लगा तो दोनों स्कूल के बच्चों की तरह हँसते हुए शॉवर से निकल कर गीले बदन ही होटल के फर्श पे पानी की धार टपकाते हुए बाथरूम से बाहर भागे। दोनों बिस्तर पे कूद के एक दूसरे से लिपटते–चिपकते चूमा–चाटी करने लग और जल्द ही रोहित का लंड एक बार फिर उसकी टीचर की लंड में जड़ तक घुसा हुआ था। उन्होंने उस दिन की आखिरी चुदाई की और फिर एक बार जल्दी से नहाने के बाद तैयार हो गए। दोनों का ही होटल से जाने का मन नहीं था पर अन्त में दोनों अपने–अपने घर चले गए।

नीरा इन दिनों बहुत ही खुश और उत्साहित थी। उसने पहले जैसे ही कॉलेज में अपनी कामुक हर्कतों से लड़कों को तड़पाना जारी रखा और रोहित से जब भी मौका मिलता खूब चुदवाती। नीरा को एक दिन अपने पति के साथ एक फ़ार्म–हाऊस पे पार्टी में जाना पड़ा। नीरा का मूड तो नहीं था पर पति और पति के बिज़नेस–रिलेशंस की वजह से जाने को तैयार हो गयी।

यह पार्टी भी बाकी पार्टियों जैसी ही थी। वही पीना–पिलाना और लोगों का छोटे–छोटे झुँड बना कर चर्चायें करना। नीरा ने उस दिन बहुत ही सैक्सी पार्टी गाऊन पहना हुआ था जिसमें उसके कँधे बिल्कुल नंगे थे। नीरा पहले तो अलग–थेलग खड़ी ड्रिंक पीती रही पर जल्दी ही लोगों में घुल–मिल गयी और उसे थोड़ा अच्छा भी लगने लगा। अपनी आदत से मजबूर नीरा

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

का अपने ड्रिंक्स पे कोई नियंत्रण नहीं था और वोह काफी नशे में थी। ऐसी पार्टियों में लोगों का नशे में धुत्त होना अनुचित नहीं समझा जाता था। नीरा अपना चौथा पैग पकड़े दीवार से टिक कर खड़ी हुई थी और चार–पाँच औरतों के साथ उनकी गपशप सुन रही थी कि तभी उसे विक्रम दिखायी दिया। वोह कमरे के दूसरी तरफ एक दम्पति से बातें कर रहा था। जब तक विक्रम अकेला नहीं हुआ तब तक नशे में होने के बावजूद नीरा उस पर बाज़ की तरह अपनी नज़र रखे रही क्योंकि पार्टी में भीड़ बहुत थी और नीरा उसे खोना नहीं चाहती थी।

विक्रम को अकेला पा कर नीरा नशे के कारण अपने हाई हील सैंडलों में लगभग लड़खड़ाती हुई उसके पास गयी और पीछे से विक्रम के कँधे पे थपथपा के बोली, *"हाय! पहचाना मुझे?"*

विक्रम ने घूम के अपने पीछे खड़ी खूबसूरत औरत का आँकलन किया जिसकी मदहोश आँखों से साफ ज़ाहिर हो रहा था कि वोह नशे में थी। नीरा को भी विक्रम के चेहरे की भावों से लगा कि वोह उसे याद करने की कोशिश कर रहा है और फिर विक्रम की आँखें एक दम बड़ी हो गयीं।

"ओह, आप हैं..?" विक्रम किसी थप्पड़ या वैसी कुछ आशा करता हुआ बोला। नीरा के चेहरे से पता नहीं लग रहा था कि वोह गुस्से में थी या अच्छे मूड में थी।

"हाँ मैं। क्या कुछ देर के लिए बाहर गार्डन में आओगे? यहाँ बहुत भीड़ है," नीरा कह के चल पड़ी।

विक्रम बिल्कुल सन्न था पर उसे लगा कि अगर यह औरत उसकी पिछली वारदात को लेकर उसे फटकारना चाहती है तो बाहर गार्डन काफी उप्युक्त था

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

क्योंकि एक तो बाहर अँधेरा था और दूसरे बाहर कोई था भी नहीं। विक्रम ने घूर के नीरा की हाई हील सैंडल के कारण मटकती गाँड देखी तो उसके थोड़ा घबड़ता हुआ नीरा के पीछे चल पड़ा। बाहर आकर उसे अचानक नीरा कहीं नहीं दिखी पर फिर उसने नीरा को दूर खड़े अपनी तरफ़ हाथ हिलाते हुए देखा। वोह लोगों की नज़रों से दूर हरे–भरे लॉन में नीरा के पास जा कर खड़ा हो गया।

"देखिये, मैं उस दिन के लिए आपसे माफी...." विक्रम ने बोलना शुरू किया पर उसे धचका सा लगा जब नीरा ने उसका चेहरा अपने दोनों हाथों में पकड़ कर अपने होंठ उसके होंठों पे रख दिये। नीरा की इस अक्समात हर्कत से विक्रम कुछ क्षणों के लिए जम सा गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है पर जब नीरा ने अपनी जीभ उसके होंठों की बीच में गड़ायी तो विक्रम ने अपने होंठ खोल के नीरा की जीभ अपने मुँह में घुसने दी और फिर दोनों एक दूसरे के मुँह में किस करने लगे।

विक्रम को समझ नहीं आ रहा था कि अपने हाथों का क्या करे। वोह नीरा को अपनी बाँहों में पकड़ना चाहता था पर उसे डर था कि कहीं पिछली बार की तरह भाग ना जाए। उसने अपने हाथ अपनी साईड पे हे रखे जब तक कि नीरा ने खुद उसकी बाँहों को खींच कर अपनी गाँड के इर्द–गिर्द नहीं लपेटा। विक्रम ने नीरा के गाऊन के ऊपर से ही उसकी नर्म–मुलायम गाँड को दबाया। वोह अभी भी अनिश्चित सा था पर फिर नीरा के हाथों ने भी बढ़ कर विक्रम की गाँड दबोच ली। उन दोनों के होंठ अभी भी एक दूसरे से चिपके हुए थे और दोनों इतने जोश से चूम रहे थे कि उन दोनों की ठोड्डियाँ उनके थूक के मिश्रण से भीग गयी थीं। नीरा बहुत उत्तेजित थी और उसकी अँगुलियाँ पागलों की तरह विक्रम की बेल्ट टटोल रही थीं। विक्रम की अँगुलियाँ भी नीरा का गाऊन पीछे से धीरे–धीरे अपने मुठियों में भरते हुए ऊपर खींच रही थीं जब नीरा के गाऊन का निचला किनारा उसके हाथ

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

में आ गया तो विक्रम ने ड्रेस को एक हाथ में ऊपर पकड़ लिया और दूसरा हाथ नीरा की गाँड पे रख दिया। नीरा चूमते हुए विक्रम के मुँह में ही सिसकने लगी।

नीरा ने विक्रम की पैंट खोल के नीची गिरने के लिए छोड़ दी। पैंट जब विक्रम की माँसल जाँघों मे फँसने लगी तो विक्रम ने अपनी टाँगें झटका कर पैंट अपने पैरों तक गिरा दी। नीरा ने विक्रम के अंडर–वीयर में हाथ डाल कर उसका लंड पकड़ लिया और विक्रम भी नीरा की पैंटी में हाथ डाल कर उसके नंगे चूत्तड़ मसलने लगा। तब कहीं जा कर उन्होंने चूमना बँद किया।

"मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ," विक्रम हाँफता हुआ बोला।

"इसमें समझने का क्या है? पिछली बार मैं बेवकूफ थी जो ऐसा मौका छोड़ कर भाग गयी और आज मैं अपनी भूल सुधारना चाहती हूँ।"

नीरा अपने घुटनों के बल नीचे बैठ गयी और विक्रम का अंडर–वीयर झटक के उसकी जाँघों तक खींच कर उसका लंड अपने मुँह में भर लिया। विक्रम अपने मेज़बान के लॉन में अँधेरे में खड़ा था और एक शादी–शुदा औरत उसका लंड चूस रही थी। विक्रम को दूर से लोगों की आवाजें सुनायी दे रही थीं पर उसका ध्यान अपना लौड़ा चूसती नीरा के मुँह से निकल रही सुड़कने की आवाजों पर था। नीरा ने अपने मुँह से लंड निकाला और इस अजनबी विक्रम को जिसे उसने पिछली बार दुत्कार दिया था, उसकी आँखों में ऊपर देखती हुई अपनी मुठी उसके भीगे हुए लंड पे ऊपर नीचे चलाने लगी। विक्रम विस्मित सा नीरा को ताक रहा था जो अपने चेहरे पे लंड रगड़ते और लंड को नीचे से छोर तक चाट रही थी। जब नीरा को अपनी हथेली में लंड की चिकनाहट कम होती महसूस होती तो वोह फिर अपने

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

मुँह में डाल कर चूसने लगती।

विक्रम के तने हुए सख्त लंड को रात की ठंडी हवा में धड़कता हुआ छोड़ कर नीरा अचानक बोली, *"अब मैं तुम से चुदवाना चाहती हूँ.... अब चोदो मुझे अपने लौड़े से।"* विक्रम झुकते हुए उसे धक्का दे कर वहीं लिटाने वाला था पर नीरा ने उसे रोक दिया, *"नहीं! मुझे अपनी ड्रेस पे घास के धब्बे नहीं लगवाने।"*

विक्रम यह सुन कर हक्का–बक्का रह गया। उसका लंड इतना सख्त हो कर फुफकार रहा था और इस औरत को अपने कपड़े गंदे हो जाने की फिक्र हो रही थी। नीरा ने खड़ी हो कर विक्रम का हाथ पकड़ा और मकान के साईड की तरफ चलने लगी। विक्रम ने जल्दी से अपनी पैंट घुटनों के ऊपर खींची और अनिश्चित सा अपनी पैंट पकड़े हुए नीरा के पीछे चल पड़ा।

जब वोह दोनों उस मकान के पीछे नीरा की पसंद के स्थान पर पहूँचे तो नीरा ने अपनी ड्रेस ठीक से उतार कर तह करके एक तरफ रख दी। चाँदनी रात में अब नीरा सिर्फ पैंटी और हाई हील के सैंडल पहने किसी संगमरमर की मूर्ती लग रही थी। नीरा ने फिर अपनी पैंटी नीचे खींची और लात मार कर उसे घास पे फेंक दिया। विक्रम को फिर अपने नज़दीक खींच कर नीरा ने कुदते हुए अपने टाँगें विक्रम की कमर पे और अपनी बाँहें उसकी गर्दन में लपेट दीं। विक्रम अचानक चौंक गया और यन्त्रवत उसने नीरा की गाँड पकड़ कर ऊपर ऊठा लिया और दोनों को गिरने से बचाया। विक्रम की पैंट एक बार फिर उसके पैरों के इर्द–गिर्द गिर गयी और उसका तना हुआ लौड़ा लचक कर नीरा की चूत के खुले छेद से सट गया। विक्रम कोई मुर्ख तो था नहीं। उसने अपने हाथ से अपना लौड़ा पकड़ कर नीरा की गीली चूत में ढकेल दिया।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

"हाँ... उम्म्म...!" विक्रम के लौड़े पे नीचे धँसती हुई नीरा सिसकी, मुझे यह पहले ही कर लेना चाहिए था।

"तो फिर किया क्यों नहीं?" नीरा को अपने लंड पे ऊपर नीचे उछलने में मदद करते हुए विक्रम ने पूछा।

"मैं बहुत बड़ी बेवकूफ थी... शायद... पर अब मुझे अकल आ गयी है," नीरा अपनी चूत को उसके लंड पर सिकोड़ कर हँसते हुए बोली।

उसके बाद दोनों ने कोई बात नहीं की। नीरा ने उसके लंड को अपनी चूत में चोदने के लिए जितना हो सका उतनी जोर से विक्रम को कस के जकड़ लिया। इस तरह चुदवाना सुविधाजनक नहीं था पर यह तरीका कुछ अलग था और दूर से लोगों के हँसने और बोलने की आवाजें नीरा को और भी उत्तेजित कर रही थीं। विक्रम भी नीरा की गाँड पकड़े हुए जितना हो सकता था उतनी जोर से अपना लंड नीरा की चूत में ऊपर पेल रहा था। इसी तरह दोनों चुदाई करते रहे और फिर नीरा ने थरथराते हुए अपनी चूत का रस छोड़ कर विक्रम के लंड को भिगो दिया। विक्रम नीरा के सम्भल जाने तक थोड़ा रूका और फिर नीरा की कमर पीछे दीवार पे टिका कर जोर–जोर से अपना लंड नीरा की चूत में अंदर–बाहर ठेलने लगा और जल्दी ही अपने लंड का रस नीरा के चूत–रस में मिला दिया। दोनों हाँफते हुए एक दूसरे को जकड़े हुए उसी तरह पाँच मिनट तक रूके रहे।

जब विक्रम का लंड ढीला पड़ने लगा और उसकी उत्तेजना कम हो गयी तो नीरा भी उसे भारी प्रतीत होने लगी। नीरा की चूत में से अपना लंड बाहर निकालते हुए विक्रम ने नीरा को धीरे से नीचे उतारा। जब नीरा के पैर घास पर पड़े तो नीरा ने अपनी पकड़ छोड़ दी और दोनों अलग हो गये। नीरा ने अपनी पैंटी ढूँढ कर पहनी और फिर अपना गाऊन सीध कर के पहना।

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.

अँधेरे में भी उसे कुछ सलवट दिख रहे थे पर उसने कुछ फिक्र नहीं की। नीरा विक्रम के होंठों पे एक चुम्मा दे कर जल्दी से घर के अंदर वापस चली गयी और अँधेरे में अकेला खड़ा विक्रम अचम्भित सा उसे देखता रहा।

नीरा सीधी बाथरूम में गयी। फिर से अपनी पैंटी उतार कर उसने अपने गाऊन का अगला छोर ऊठा कर अपने ठोड़ी के नीचे दबाया और एक तौलिया गिला कर के अपनी वीर्य से भरी चूत और टाँगें साफ कीं और फिर वोह तौलिया मैले कपड़ों की टोकरी में डाल दिया। नीरा को यह सोच कर हँसी आ गयी कि जब वोह कपड़े धुलेंगे तो किसी को इस बात का पता नहीं होगा की उसकी दूसरे मर्द के साथ चुदाई का सबूत भी धुल रहा है। जब नीरा को लगा कि अब वोह पार्टी में जाने योग्य दिख रही है तो वोह बाहर निकली। नीरा के पती ने जब उसे देखा तो उसके पास आ कर प्यार से बोला, *"डार्लिंग... कहाँ थी तुम इतनी देर...?"* नीरा ने उसके होंठों पे किस करते हुए बताया कि वोह और लोगों के साथ घुलमिल रही थी और उसके पति को बिल्कुल शक नहीं हुआ। अपनी पति को चूमते हुए नीरा को हँसी–जनक लगा क्योंकि नीरा के यही होंठ थोड़ी देर पहली किसी दूसरे मर्द के लंड पे लिपटे हुए थे। पर जो बात उसके पति को नहीं मालूम, वोह बात उसे चोट नहीं पहुँचा सकती। कम से कम नीरा ने तो खुद को यही दलील दी। उसे अपने पति के अलवा औरों से चुदाई का आनन्द मिल रहा था और आगे भी गैर–मर्दों से चुदवाते रहने का नीरा का इरादा था। अगर उसका पति उसकी चूत की दहकती आग नहीं बुझा सकता तो दूसरे बुझायेंगे। और अब तक उसे अपना एक स्टूडेंट मिल गया था जो खुशी से नीरा की सब शारिरिक जरूरतें पूरी कर रहा था और अब उसे एक और अजनबी मिल गया था।

..... continued in part 3

This story may not be transmitted to the public by any means such as posting to the Internet or to newsgroups, and may not be altered in any way without author's expressed written permission.
Author can be contacted at reena_kanwar2002@yahoo.co.in
Copyright 2006 Reena Kanwar, All Rights Reserved.